।।ॐ।।

कोरोना कालखंड में विद्याभारती कार्यकर्ताओं को पाथेय

(मा. भैयाजी जोशी, सरकार्यवाह)

दिनांक 07 जुलाई, २०२०

आज एक विशेष परिस्थिति में हम सब लोग एक साधन के माध्यम से मिल रहे हैं। प्रत्यक्ष में मिलने का एक अलग ही आनन्द रहता है। इस प्रकार के माध्यम में मिलने से हम कभी सन्तुष्ट नहीं होते, परन्तु थोड़ा सन्तोष रहता है कि सब को एक बार देख सकें। मेरे मन में विचार आया कि आप सब लोग अपने-अपने क्षेत्र में मार्गदर्शन करने वाले कार्यकर्ता हैं। इसलिए आपको कोई नई बात बताने की न तो आवश्यकता है और न मुझ जैसे व्यक्ति के लिए सम्भव है। आप विद्याभारती के कार्य में लगे हैं, विद्याभारती के बारे में अनेक प्रकार के विषयों का चिन्तन करते हैं। मैं केवल आज के इस समय का उपयोग करते हुए एक प्रकट चिन्तन कहिए, लॉउड थिंकिंग कहिए, थिंकिंग में नया नहीं होता है। हम जो जानते हैं, उसी का फिर से स्मरण करते हैं। इसलिए एक सीमित समय में आप सब के मन में आने वाले विचारों को मैं प्रकट रूप में आप के समक्ष रखने की कोशिश कर रहा हूँ।

आज अदृश्य शत्रु का संकट है

हम सब आज एक अद्‌भुत संकट से गुजर रहे हैं। इस समूह में बैठे हुए सब लोगों के लिए यह एक नये प्रकार का अनुभव है। आज संकट है, शत्रु है, परन्तु अदृश्य है। जब दृश्य शत्रु सामने होता है, तो संघर्ष करना आसान रहता है, परन्तु जब अदृश्य शक्तियाँ रहती हैं, तब थोड़ी कठिनाई आती है। इसलिए इस पीढ़ी के लिए, हमारे लिए यह एक भिन्न प्रकार का अनुभव है। आज के इस संकट की दृष्टि से एक बात ध्यान में आती है कि यह एक समूह के विरुद्ध दूसरा समूह नहीं है। एक देश के विरुद्ध दूसरा देश भी नहीं है। सारा विश्व एक तरफ है और अदृश्य शक्ति एक तरफ है। इसलिए यह संकट किसी भू–प्रदेश का नहीं, किसी वर्ग विशेष का नहीं, किसी देश का भी नहीं है, इस संकट को तो सारा विश्व अनुभव कर रहा है। इस सन्दर्भ में जब मैं विचार कर रहा हूँ तो मेरे मन पर आज की परिस्थिति का मेरे बोलने पर, मेरे विचार रखने पर उसका बड़ा प्रभाव है।

हमारा व्यवहार मार्गदर्शक रहा है

इस सम्पूर्ण परिस्थिति में विश्व के सन्दर्भ में जब हम देखते हैं तो दुनिया के अलग–अलग देशों ने अलग–अलग ढंग से इस संकट के बारे में कुछ सोचा है और कुछ किया है। परन्तु जब हम भारत को देखते हैं तो हम जिस विचार धारा से जुड़े हुए हैं, ऐसे सब लोगों की भूमिका संकट काल में कैसी रही है ? एक अद्‌भुत अनुभव सब लोगों ने लिया है, जिसका वर्णन शब्दों में करना बहुत कठिन है। क्योंकि यह संकट ऐसा है, जिसका सामना योजनाबद्ध ढ़ंग से नहीं किया जा सकता। इसलिए स्थान–स्थान के कार्यकर्ताओं ने सारी आवश्यकता एवं परिस्थिति को समझकर समाधान की दिशा में एक बृहद् प्रयास देश भर में किया है। जब कभी इन घटनाओं का इतिहास

लिखा जायेगा तो अपने कार्यकर्ताओं के द्वारा, अपने हितचिन्तकों के द्वारा, अपने सहयोगियों के द्वारा इस कालखंड में जो व्यवहार प्रकट हुआ है वह अद्‌भुत है, सारे विश्व के लिए एक मार्गदर्शक रहा है। जो व्यवहार अपने लोगों ने भारत में किया है, वैसा भारत के बाहर किसी भी देश में वहाँ के लोगों का व्यवहार नहीं रहा है।

विश्व में हमारी अलग पहचान बनी है

जब मैं हमलोग कहता हूँ तो मेरा तात्पर्य भारत की धार्मिक व सामाजिक सब प्रकार की व्यवस्थाओं से है। इन सबने मिलकर समाज के प्रति अपने कर्तव्य का परिचय बहुत अद्‌भुत ढ़ंग से दुनिया को करवाया है। ये पीड़ित लोगों की सहायता के लिए दौड़ पड़े। एक व्यवस्था होती है और एक भावना होती है। शायद दुनिया के अन्यान्य देशों में व्यवस्थाओं का निर्माण हुआ होगा, परन्तु भारत में हमारे द्वारा सभी समाजों को साथ में लेकर चलने वाली जो व्यवस्थाएँ हैं, उन सबका बहुत भिन्न प्रकार का योगदान व भूमिका रही है। सब प्रकार के मंदिर, गुरुद्वारे, जाति–बिरादरी की संस्थाएँ, पंथ–सम्प्रदाय सब प्रकार के लोग अपनी–अपनी क्षमता के अनुसार इस संकट से जूझने के लिए अपने–अपने ढ़ंग से प्रयत्नशील रहे हैं। ये दृश्य भारत के अलावा और कहीं पर भी दिखाई नहीं देता। इस प्रकार हमारी एक पहचान और हमारा परिचय सारे विश्व को इस निमित्त से हुआ है। इस संकट के कालखंड में साधनों का अभाव रहा होगा,फिर भी संकट से बचने के लिए अभी भी शोधकार्य करने वाले लगे हुए हैं। परन्तु अभी तक किसी प्रकार की दवा उपलब्ध नहीं हुई है। कोशिश चल रही है, हम अपेक्षा करते हैं कि बहुत जल्दी उसमें से कोई समाधान निकलेगा।

आज अनिश्चितता का वातावरण है

हम सब इन दिनों बहुत ही अनिश्चितता के वातावरण का अनुभव कर रहे हैं। मैं गत् दो–तीन महीनों से अनुभव कर रहा हूँ कि हम कुछ तय करते हैं, किन्तु तय किया हुआ कर नहीं पाते हैं। कभी नई नियमावली आती है, कभी नई व्यवस्थाएँ खड़ी होती हैं, कभी पुरानी व्यवस्थाएँ बन्द हो जाती हैं। इसलिए सब प्रकार से चिन्तन करते हुए योजना बनाने के बाद भी उसके क्रियान्वयन में बहुत समस्याएँ आती हैं। समाज में सब ओर एक अनिश्चितता का वातावरण दिखाई दे रहा है। यह केवल अपने बारे में ही नहीं, काम करने वाले, रोजगार करने वाले, नौकरी करने वाले, व्यवसाय करने वाले तथा सामान्यजन से लेकर सभी ज्येष्ठ–श्रेष्ठजनों एवं इस देश के नेतृत्व तक सभी अनिश्चितता के दौर से गुजर रहे हैं। यह इस कालखंड की हमारे ध्यान में आई हुई एक प्रमुख बात है।

हमारी परम्परायें खण्डित हुई हैं

इस कालखंड में जैसी अनिश्चितता है, वैसी ही भिन्न–भिन्न चुनौतियाँ भी हम सब के समक्ष खड़ी हैं। इन चुनौतियों का जब विचार करते हैं तो हम सब को अपनी परम्परागत जीवन शैली से हटकर व्यवहार करना पड़ रहा है। हमारे यहाँ पर मिलना–जुलना, एक–दूसरे के कन्धे से कन्धा लगाकर काम करना सामान्य बात है। परन्तु एक दूरी रखने की बात आई। पहले तो सब लोगों ने इसको सामाजिक दूरी बताया परन्तु सामाजिक दूरी हमारे यहाँ कभी भी हो नहीं सकती, इसलिए

आगे चलकर नई शब्दावली में यह भौतिक दूरी बन गई। वास्तव में भारत में हम जैसे लोगों को दूरी स्वीकार ही नहीं है, फिर वो शारीरिक हो, मानसिक हो या सामाजिक हो। परन्तु आज हम सब को न चाहते हुए भी इस भौतिक दूरी का पालन करना पड़ रहा है। हम लोग तो समूह के बीच जाने वाले, समूह के बीच बैठने वाले, भीड़ में आने वाले और उसमें भी आनन्द मनाने वाले लोग हैं। भारत में भीड़ के कारण लोग थोड़े परेशान जरूर होते हैं, परन्तु क्रोधित नहीं होते, उसमें भी उन्हें आनन्द आता है। मंदिर में जाते हैं तो थोड़ी बहुत धक्का–मुक्की होती है, उसे भी आनन्द के साथ सहन कर लेते हैं। इसलिए समूह के बीच सबके साथ रहने का हमारा स्वभाव है। लेकिन आज की परिस्थिति में इस दूरी का पालन करते हुए हम अनेक प्रकार की कठिनाइयों का अनुभव करते हैं।

केवल कठिनाइयाँ ही नहीं तो हमारे श्रद्धा के स्थान बन्द हो गए हैं। मंदिरों में रोज–रोज जाना बन्द हुआ, यात्राएँ बन्द हुईं, इतना ही नहीं हजारों वर्षों से चली आ रही परम्पराएँ इस वर्ष खंड़ित हो गईं। न जगन्नाथ की यात्रा हुई, न अमरनाथ की यात्रा हो पाई। बद्रीनाथ व केदारनाथ के कपाट खुल गये, लेकिन वहाँ जाने वाला कोई नहीं है। हमारे कितने धार्मिक पर्व इसके बीच में आए व गए लेकिन अपने श्रद्धा के स्थानों पर जाने में सामान्य व्यक्ति अपने आपको असमर्थ महसूस कर रहा है। इन बातों का हमारी जीवनशैली में कोई स्थान नहीं है, फिर भी आज की परिस्थिति तो ऐसी बनी हुई है।

हम कटु अनुभवों से गुजर रहें हैं

इस कालखंड में अनेक दुःखद घटनाएँ हुईं हैं। अपने निकट के रिश्तेदारों की मृत्यु हुई, समाचार सुना परन्तु हम उनके दर्शन करने नहीं जा सके। हम परिवारजनों से मिलने नहीं जा सके। अनेक लोगों ने अपने आत्मीयजनों को खोया है, उनका अन्त्येष्टि संस्कार करने भी नहीं पहुँच सके, सब कुछ शासन की व्यवस्थाओं के भरोसे छोड़कर मूक साक्षी बनना पड़ा है। इस प्रकार का दुःखद अवसर किसी के जीवन में इससे पहले नहीं आया होगा। हम अनुभव करते हैं कि इन दुःखद घटनाओं से पीड़ित इस प्रकार का मन हम सब का बना हुआ है। इसलिए आज की इस परिस्थिति में हम सब लोग थोड़े असहज हो गये हैं। असहज, यह हमारी शैली में नहीं है, ये हमारे मन की भावनाएँ नहीं हैं। परन्तु आज इस प्रकार के कटु अनुभवों में से हम लोग गुजर रहे हैं।

विश्व ने हमारे नमस्कार को स्वीकारा है

कभी–कभी संकट भी अवसर के रूप में परिवर्तित हो सकता है। आज हम देख रहे हैं कि भारत की सामान्य बातों को विश्व भी स्वीकार करने की मानसिकता में आ रहा है। हमारे यहाँ पर नमस्कार करने की परम्परा है, उसको सारे विश्व ने स्वीकार कर लिया है। हाथ मिलाने के स्थान पर परस्पर नमस्कार करना इतनी सहजता से स्वीकार हो गया। और भी कई प्रकार की पद्धतियाँ थीं उन्हें नहीं स्वीकारा, विश्व ने इस नमस्कार को ही स्वीकार किया है। बात है तो बहुत छोटी परन्तु नमस्कार से एक–दूसरे के प्रति जो भाव व्यक्त होता है, वह अन्य किसी माध्यम से होना सम्भव ही नहीं है। इसका अनुभव विश्व ने भी लिया है। तो यह बात संकट काल में अवसर प्राप्त करने की है।

व्यक्तिगत स्वच्छता व संयम चाहिए

हमारी जीवनशैली में स्वच्छता का अपना एक महत्त्व है। बाहर के देशों में सार्वजनिक स्वच्छता तो दिखाई देती है, परन्तु व्यक्तिगत स्वच्छता में वहाँ कई प्रकार का अभाव रहता है। भारत के स्वभाव में सार्वजनिक स्वच्छता में हम थोड़े पिछड़ गये होंगे, लेकिन व्यक्तिगत जीवन में सब प्रकार की स्वच्छता को हम बहुत महत्त्व देते आए हैं। आज दुनिया भी इस को स्वीकार करने लग गई है। साबुन से हाथ धोना, सेनेटाइजर का उपयोग करना, ये सब क्या हैं ? आज सारा विश्व व्यक्तिगत स्वच्छता की दिशा में बढ़ता हुआ दिखाई देता है।

एक और बात ध्यान में आई है, वह है संयमित जीवन। संयमित जीवन बड़ी सरलता से जीया जा सकता है। हमने अपनी आदतों के कारण इतनी अधिक आवश्यकताएँ बढ़ा कर रखी थीं। हम इतने अधिक साधनों के पीछे भाग रहे थे, परन्तु तालाबन्दी के कारण इन दिनों में सब लोगों ने जो उपलब्धहै, उसके साथ जीना सीख लिया है। सामान्य जीवन में यह नहीं रहता है, लेकिन इस कालखंड में हमने सीखा है। शायद दुनिया भी इस दिशा में आगे सोचना प्रारम्भ करेगी कि संयमित जीवन जीना चाहिए। हमारा जीवन न्यूनतम आवश्यकताओं के ऊपर चलना चाहिए। सादगी भी इसके साथ जुड़ा हुआ शब्द है। सादगी का महत्त्व भी लोगों के ध्यान में आया है। केवल व्यवस्थाएँ अच्छी होने से सुरक्षा नहीं होती, व्यवस्थाओं के साथ–साथ सादगी भरा जीवन जीने का अभ्यास भी होना चाहिए। हम भारत के लोग तो निश्चित रूप से इस सादगी का अनुभव कर रहे हैं।

इस संकट में भी प्रेरक बातें हैं

जीवन में अनुशासन का भाव भी होना चाहिए। दुनिया में किसी की लॉकडाउन करने की हिम्मत नहीं हुई। जिन्होंने किया वे उसे सफलतापूर्वक क्रियान्वित नहीं कर सके। हम जब भारत का दृश्य देखते हैं तो इतना अधिक आनन्द होता है कि जो–जो भी सूचनाएँ तय की गईं, व्यवहार के बारे में जो–जो बताया गया, वह बिना किसी भय के आधार पर केवल अपनी सरकार का निर्णय है और हमारे लिए है, ऐसा सोचकर लोगों ने इस लॉकडाउन के कालखंड में इतनी बड़ी संख्या में अनुशासन का पालन किया है जो एक अद्‌भुत बात है। इसलिए जो अध्ययन करने वाले लोग हैं, वे यही कहते हैं कि इस प्रकार के संयमित व अनुशासित लोग जिस देश में हैं,वे उस देश को संकट से बड़ी आसानी से पार लगा सकते हैं। इस अनुशासन का परिचय भी हमने सारे विश्व को दिया है। सारी दुनिया का जो संख्यात्मक वृत आ रहा है, उस संख्यात्मक वृत को जब हम देखते हैं तो भारत सभी देशों की तुलना में बहुत सुरक्षित अनुभव करता है। यहाँ की मृत्युदर कम है, यहाँ का ठीक होने का प्रमाण भी अच्छा है और यह दिन–प्रतिदिन बढ़ रहा है। मुझे लगता है कि इस सारे संकट को अपने लोगों ने कंधे से कंधा मिलाकर इस संकट का सामना किया है। हमने भारत का एक भिन्न प्रकार का परिचय सम्पूर्ण विश्व को दिया है कि भारतीय समाज अगर एक बार सोच लेता है तो वह सब प्रकार की बातों का पालन कर सकता है। इस का दर्शन आज के कालखंड में हुआ है। इसलिए मैं कहता हूँ कि इस संकटकाल में कुछ प्रेरणा देने वाली अच्छी बातें भी हम सब के अनुभव में आ रही हैं।

हमें देशभक्ति का भाव स्थायी बनाना है

यह दुर्भाग्य ही है कि इस कालखंड में तूफान आ गये,इसी कालखंड में चीन ने अपने विस्तारवाद का चेहरा हम सब के सामने रखा। तूफान का संकट इतना आसान तो नहीं था, परन्तु उस में से भी हमने बड़ी शान्ति के साथ, बड़े संयम के साथ उस संकट को झेला है। लेकिन चीन के द्वारा लद्दाख की सीमा पर जो कुछ गतिविधियाँ हुईं, उसके कारण सारे देश के हृदय में स्थापित देशभक्ति का भाव एक बार पुनः प्रकट होता हुआ दिखाई देता है। भारत में चीन के विरोध में एक वातावरण बन रहा है। सामान्य से सामान्य बालक भी देश के प्रति जागरूक होता हुआ दिखाई दे रहा है। बड़े–बड़े लोग जागृत होते हुए दिखाई देते हैं। हम किसी भी प्रकार से चीन की इन सब बातों को स्वीकार नहीं करेंगे। इस घटना के कारण देश का, जनसामान्य का, नीतिनिर्धारकों का और राज्यशासन चलाने वालों का जो मानस है, वह इतनी सहजता से देशभक्ति से प्रेरित होता हुआ दिखाई दे रहा है। मैं समझता हूँ कि इस के दूरगामी परिणाम चीन को भुगतने पड़ेंगे। आखिर एक सौ तीस करोड़ का देश है, कोई छोटा–मोटा देश नहीं है। इतनी बड़ी संख्या वाला देश यदि कुछ ठान लेता है तो दुनिया की कोई भी ताकत ऐसी नहीं है जो भारत की इस विराट शक्ति के सामने टिक सके। अब हमारे सामने यह चुनौती अवश्य है कि जो भाव आज किसी प्रसंग के कारण प्रकट हुआ है, वह हमारा स्थायी भाव बने। ऐसा हमारा चिन्तन सदैव बना रहे। स्थायी चिन्तन बने, इस व्यवहार के प्रति हमारी प्रतिबद्धता स्थायी रहे, इसलिए यह आह्वान सब के सामने है।

हमें भारत को आत्मनिर्भर बनाना है

इस कालखंड में एक अच्छी बात हुई देष को आत्मनिर्भर बनाने की, भारत आत्मनिर्भर बनेगा, क्योंकि भारत में यह सामर्थ्य है। हम कब तक दूसरों की बैशाखियों को लेकर चलेंगे ? इसलिए संकट के इस कालखंड में एक अवसर हमें मिला है। इस अवसर पर हम एक बार फिर अपनी देशभक्ति और कर्तव्यनिष्ठा को जगाते हुए दुनियाँ के सामने एक आदर्श प्रस्तुत करना चाहेंगे। हम चाहेंगे और अवश्य चाहेंगे कि दुनिया के सारे देश अपने आपको आत्मनिर्भर बनायें। दुनिया के अन्यान्य क्षेत्रों पर निर्भर होकर चलना, यह गुलामी की मानसिकता का परिचायक है। हम स्वतन्त्ररूप से खड़े हो सकते हैं, यह चुनौती हम सब के समक्ष अवश्य है। मैं मानता हूँ कि आत्मनिर्भर भारत की दिशा में चिन्तन के स्तर पर, व्यवहार के स्तर पर अब हम ने चलना प्रारम्भ कर दिया है। अब सब संस्थाओं की भूमिका यह रहनी चाहिए कि जो बदला हुआ वातावरण है, उसको बनाए रखना, उसको और अधिक व्यावहारिक बनाना तथा उसके आधार पर भारत पुनः एक बार विश्व में अपनी अलग प्रकार की प्रतिभा ले कर खड़ा रहे। इस में ही हम सब की प्रतिष्ठा है, ऐसा मुझे लगता है।

बदले हुए परिदृष्य को स्थायी बनाना है

एक बहुत बड़ा दर्शन इस कालखंड में हम सब को हुआ है। संघ के कई कार्यकर्ताओं से मेरा मिलना–जुलना होता है, बात–चीत होती है। इस सारे कालखंड में "ई–शाखाएँ" लगनी प्रारम्भ हुई। जो संघ केवल संघस्थान तक सीमित था, उसका एक अंश परिवारों में अलग–अलग निमित्त से पहुँचा था। परन्तु इस "ई–शाखा" के माध्यम से पूरा संघ सब प्रकार से घरों में पहुँच गया है, ऐसा ध्यान में आया है। इस "ई–शाखा" का अवसर भी हम सब को मिला है। इस में जो–जो

कार्यक्रम परिवारों में होते थे, उन परिवारों ने सब बातों को सुना और स्वीकार किया। इन्हीं दिनों कुटुम्ब प्रबोधन की एक गतिविधि के द्वारा एक प्रयोग हुआ। २१ जून अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस है। उस दिन सारे भारत में कुटुम्ब प्रबोधन की योजना से घर–घर में योग दिवस के उपलक्ष्य में एक कार्यक्रम दिया गया था। मैंनें केवल एक प्रान्त का वृत सुना है, पूरे देश का वृत तो अभी आयेगा। परन्तु जम्मू जैसे प्रान्त में इस योग दिवस के दिन दिये गये कार्यक्रम में केवल आसन–प्राणायाम करना नहीं था, अपितु यह बात रखी गई कि इस निमित्त से योग का प्रारम्भ यम–नियम के पालन से करेंगे। अपने व्यक्तिगत जीवन में करणीय–अकरणीय बातों का स्मरण करेंगे, यह मुख्य उद्देश्य उसमें रखा गया और जम्मू जैसे प्रान्त में लगभग चौदह हजार लोग सम्मिलित हुए। हजारों परिवारों में ये कार्यक्रम हुए। देशभर का विचार करेंगे तो कई लाख लोगों ने इस दिन इस विषय को समझने का प्रयास किया है। इस परिवर्तन की प्रक्रिया में जो सुना है, उसको स्वीकार करने की मानसिकता इस सारे कालखंड में प्रारम्भ होती हुई दिखाई देती है। हम सब सामाजिक परिवर्तन की बात करने वाले लोग हैं। मैं समझता हूँ कि इस सामाजिक परिवर्तन के प्रारम्भ का प्रथम चरण अगर कुछ है तो वह परिवार है। वहीं से सामाजिक जीवन प्रारम्भ होता है। हम अनुभव करते हैं कि व्यक्ति के जीवन की जो यात्रा है वो अहं से वयं की ओर है। मैं से हम अर्थात् अहं से वयं की ओर उसकी जो शुरुआत है, वो परिवार से ही होती है। व्यक्ति आत्मकेन्द्रितता से बाहर निकलता है। अपने रिश्तेदारों को समझता है, अपने परिवार को समझता है और अपने परिवार के लिए अपनी छोटी–मोटी बातों और हितों के साथ समझौता करना सीख जाता है। अहं से वयं की ओर ले जाने वाला एक श्रेष्ठ संस्कार उसको जहाँ से मिलता है,वह परिवार नाम की इकाई ही है। यह ठीक है कि उसकी आगे की यात्रा और अधिक गतिमान होनी चाहिए। लेकिन उसका प्रारम्भ परिवार से है, इसलिए अपना सब प्रकार से यही प्रयास रहे कि कुटुम्ब अर्थात् परिवार यह सब प्रकार से व्यक्ति जीवन की दिशा तय करने वाला बनना चाहिए। मैं समझता हूँ कि इस कठिन परिस्थिति में भी लोगों ने इसका अनुभव लिया और इसको मन से स्वीकारा। इस समय में जो ऐसे परिवर्तन के अनुभव आ रहे हैं,उन को स्थायी बनाना हम सब के सामने एक बड़ी चुनौती है। आज ऐसा वातावरण बना, लोगों ने स्वीकारा, इस के लाभ की अनुभूति ली, इस का आनन्द लिया। अब यदि समग्रता से हम कोशिश करेंगे तो यह जो बदला हुआ दृश्य है, वो स्थायी बनना कठिन बात नहीं है।

हमें परस्परावलम्बी बनना है

जब आत्मनिर्भरता की बात आती है तो स्वाभाविक रूप से इसके तीन सूत्र ध्यान में आते हैं। हम स्वाभिमानी बनेंगे, हम स्वावलम्बी बनेंगे और हम सम्पन्न बनेंगे। देश में जब यह भाव जागृत होगा कि हम कौन हैं और हमारा अतीत क्या है ? हम कब तक औरों की नकल करते रहेंगे, हम औरों के गुणगान कब तक गाते रहेंगे ? आज एक अवसर मिला है, स्वाभिमान के साथ जब शहरों में रहने वाला, गाँवों में रहने वाला, पढ़ा–लिखा, अनपढ़, सम्पन्न परिवार से आया हुआ, निर्धन परिवार से आया हुआ सामान्य व्यक्ति भी अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए। उसकी जो भिक्षावृत्ति है, वह समाप्त होनी चाहिए तथा मैं स्वावलम्बी हूँ का भाव जागृत होना चाहिए। हम भारत में ही नहीं तो सम्पूर्ण मनुष्य जाति के बारे में कहेंगे कि शत प्रतिशत स्वावलम्बी कोई होता नहीं है। उसको

किसी न किसी पर कुछ बातों के लिए अवलम्बित रहना ही पड़ता है। हम उस की शत प्रतिशत स्वावलम्बन की बात नहीं करते, भारतीय चिन्तन में भारत के मनीषियों ने इसका अधिक अच्छे शब्दों में वर्णन किया है। यदि स्वावलम्बन नहीं है तो क्या परावलम्बन है ? नहीं, शत प्रतिशत स्वावलम्बन भी नहीं और परावलम्बन भी नहीं। हमारे यहाँ शब्द प्रयोग किया गया कि हम परस्परावलम्बी हैं। इस परस्परावलम्बन के सूत्र पर हमारा जीवन चलेगा। किन्तु व्यक्ति के मन में तो मैं अपने पैरों पर खड़ा रहूँगा का विश्वास जब जगेगा, तब वह सही दिशा में अर्थात स्वाबलम्बन की दिशा में अग्रसर होगा।

भारत का विश्वास विकेन्द्रितता में है

हमें एक सम्पन्न समाज चाहिए। "भूखे भजन न होय गोपाला" भूखे पेट से कोई अच्छा काम नहीं होता। इसलिए जीवन की जो मूलभूत आवश्यकताएँ हैं, वे उपलब्ध होनी चाहिए। परन्तु उपलब्ध होना यह भिक्षावृत्ति से नहीं, दूसरों पर निर्भर होकर नहीं तो अपने पैरों पर खड़े होकर, हम अपना जीवन सम्पन्न करेंगे। ऐसा आत्मविश्वास समाज में जगाने की आवश्यकता है। इसलिए जब अपने प्रधानमंत्री महोदय ने आत्मनिर्भर बनने की बात कही तो मुझे लगा कि जब आत्मनिर्भर व्यक्ति होगा, आत्मनिर्भर परिवार होगा, आत्मनिर्भर गाँव होगा, आत्मनिर्भर राज्य बनेगा तब जाकर आत्मनिर्भर देश बनेगा। इसलिए इस दिशा में व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनों प्रकार के प्रयत्नों की आवश्यकता रहेगी। भारत का जो आदर्श नमूना है, वो विकेन्द्रित व्यवस्थाओं का है। विकेन्द्रित उद्योग होंगे, विकेन्द्रित जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली विकेन्द्रित व्यवस्थाएँ होंगी। हम कभी भी केन्द्रित व्यवस्थाओं के पक्षधर नहीं रहे। इसलिए आत्मनिर्भर भारत की बात एक विकेन्द्रित व्यवस्था की ओर ले जाने का अच्छा अवसर है, इसलिए विकेन्द्रित व्यवस्थाएँ हों। किसी ने कहा है कि अगर एक सामान्य नियम बन जाता है, जैसे – सारे छात्रों का वेश खादी का बन जाय, यह मैं एक सामान्य उदाहरण दे रहा हूँ, तो इस देश में कितने प्रकार का रोजगार विकसित होगा और साथ में विकेन्द्रित व्यवस्थाएँ भी खड़ी होंगी। ऐसी कई बातों पर विचार होगा। कुछ बातें जिला केन्द्रित होगी, कुछ राज्य केन्द्रित होगी, कुछ देश केन्द्रित होगी, जिससे हम विदेशी शक्तियों के चंगुल से बाहर निकलेंगे और अपना देश इस दिशा में चल पड़ना चाहिए।

एक बात और जो प्रधानमंत्री जी ने कहा कि लोकल के लिए वोकल बनिए । इस लोकल की सीमा क्या हो सकती है? कई विषयों में लोकल का अर्थ देश होगा, कई उत्पादनों के सन्दर्भ में लोकल का अर्थ प्रान्त होगा, राज्य होगा, कई बातों के बारे में जिला भी हो सकता है। इसलिए लोकल की ओर ले जाना है तो विकेन्द्रित व्यवस्थाओं के सन्दर्भ में सभी स्तरों पर विचार करने की आवश्यकता रहेगी । इस दिशा में कठोर प्रयत्न करना होगा। मुझे लगता है कि आत्म निर्भर भारत बनाने का जो स्वप्न रखा गया है, उस स्वप्न को यदि आठ– दस वर्ष निरन्तर सभी दिशाओं में, सभी स्तरों पर प्रयत्न होता है तो आत्म निर्भर भारत का स्वप्न साकार होना कोई कठिन बात नहीं है। परन्तु इसके लिए जन मानस बनाने की आवश्यकता रहेगी।

हमारे जीवन में शुद्धता हो

एक बात और मैं कहना चाहूँगा कि हमारे यहाँ व्यक्ति को सामने रखकर जो बातें होती हैं, ऐसी तीन–चार बातें आप के स्मरण के लिए कहूँगा। इसमें हमारी भूमिका क्या होनी चाहिये, हम सब विद्या भारती के कार्यकर्ता हैं। हमारी भूमिका इस सन्दर्भ में बहुत प्रभावी ढंग से हो सकती है। उसका पहला सूत्र है, व्यक्तिगत जीवन की शुद्धता। केवल बाह्य शुद्धता पर्याप्त नहीं है। इसलिए हमारे यहाँ पर शब्द प्रयोग होता आया है, शुचिता होनी चाहिए। बाह्य शुद्धता तो सरल है, आन्तरिक शुद्धता होनी चाहिए। आन्तरिक शुद्धता बिना किसी जागरण के, बिना किसी मार्गदर्शन के होना सम्भव नहीं है। इसलिए शुचिता का भी संकल्प हो। केवल इतना ही नहीं तो आन्तरिक शुद्धता के लिए वातावरण निर्माण करने की आवश्यकता रहती है। वह घर में होगा, विद्यालय में होगा और समाज जीवन में भी होगा। इसलिए शुचिता को केन्द्र में रखकर हमें व्यक्तियों के सन्दर्भ में सोचने की आवश्यकता है।

हमारे जीवन में प्रतिबद्धता हो

जैसा शुद्धता का विषय है, वैसा ही प्रतिबद्धता का विषय है। हम सब के जीवन में वैचारिक प्रतिबद्धता आनी चाहिए। यदि देश को आगे बढ़ना है, तो हमारा एक सैद्धान्तिक पक्ष है। हमारा एक चिन्तन है, उस चिन्तन के प्रति ज्ञान भी होना चाहिए। उस ज्ञान के साथ– साथ प्रतिबद्धता जिसे कमिटमेंट कहते हैं, वह कमिटमेंट भी व्यक्ति जीवन में आनी चाहिए। मैं किसी भी प्रकार की परिस्थिति में इसके साथ समझौता नहीं करूँगा, ऐसे अन कोम्प्रोमाइजिंग लोग खड़े करना हैं। इसलिए जीवन की शुद्धता के साथ साथ वैचारिक प्रतिबद्धता होनी आवश्यक है।

हमारे जीवन में सक्रियता हो

इसी क्रम में तीसरी बात कहना चाहूँगा, जो बहुत महत्त्वपूर्ण है। वह है अपने समाज में सक्रियता बनाना। इसे सिखाने की बहुत आवश्यकता रहती है। हिन्दू समाज का एक प्रश्न है, उसके समक्ष एक चुनौती है। यह चुनौती है, अच्छे लोगों की निष्क्रियता। यह निष्क्रियता ही हिन्दू समाज का संकट है। समाज में सज्जन लोग निष्क्रिय रहते हैं। कई लोगों ने अलग–अलग शब्दों में इसका वर्णन किया है। दुर्जनों की शक्ति अपने आप सक्रिय रहती है, परन्तु सज्जन लोग सोचते हैं कि हम क्यों किसी झंझट में पड़ें। अपना सब ठीक है, अपना घर ठीक है, अपना परिवार ठीक है, अपना व्यवसाय ठीक है बाकी दुनिया से मुझे क्या लेना–देना। इस मानसिकता में से समाज को बाहर लाना है। यदि सज्जनों की सक्रियता बढ़ती है तो वो निर्दोष बनने की सम्भावना है। स्वार्थी लोगों की, दुर्जनों की सक्रियता समाज के लिए, देश के लिए हानिकारक होती है। सज्जनों की सक्रियता देश के लिए हितकारक होती है। यह सक्रिय जीवन कैसा होना चाहिए ? अपने यहाँ हमेशा कहते आए हैं कि वो निस्वार्थ हो, प्रामाणिक हो और अपनी सब प्रकार की शक्तियों का पूर्ण उपयोग करने वाला हो। इन सब गुणों के साथ हमें सक्रिय होना है।

हम क्रियान्वयन की योजना बनायें

ये जो तीनों बातें हैं – शुद्धता, प्रतिबद्धता और सक्रियता ये बिना संस्कारों के सम्भव नहीं है। इसलिए हमारी जो संस्कार प्रणाली है, संस्कार देने की जो व्यवस्था है, वह व्यवस्था जितनी नित्य व सशक्त होगी, संस्कार देने की प्रक्रिया जितनी विचार केन्द्रित होगी, जितनी योजनाबद्ध होगी उतने ही अच्छे परिणाम हमें मिल सकते हैं। इसलिए विद्या भारती के कार्यकर्ता के नाते निश्चित रूप से हमारे कार्यक्षेत्र का, हमारी भूमिका का इन तीनों विषयों को लेकर बहुत महत्त्व है। इस को हम कर सकते हैं, ऐसा हम सबका सामर्थ्य भी है। आज तक हम यह सब करते भी आए हैं। हमारे लिए यह नई बात भी नहीं है। यदि उसमें कोई कमी आई होगी तो उन कमियों को दूर करना है, विचार पूर्वक दूर करना है, योजना बना कर दूर करना है। इस दिशा में सभी स्तर पर क्रियान्वयन के बारे में चिन्तन होने की आवश्यकता है।

पूर्व छात्र शक्ति को सहयोगी बनायें

विद्या भारती के हम सब कार्यकर्ता पचास वर्षों से अधिक समय से लगे हुए हैं। एक लम्बी अवधि बीती है, शिक्षा के क्षेत्र में हमारा इतने वर्षों का अनुभव है। हमारे पास प्रयोगशीलता है, हमारे पास एक वैचारिक अधिष्ठान है, हमारे पास साधनों की एक बहुत बड़ी शक्ति आज उपलब्ध है। मैं आपका ध्यान इस ओर ले जाना चाहूँगा कि हम अपने सारे इतिहास पर विचार करेंगे तो जबसे विद्या भारती के कार्य का आरम्भ हुआ है, तब से आज तक हजारों हजारों छात्र अपनी इस प्रक्रिया में से निकले हैं। आज वे समाज जीवन में कहीं न कहीं खड़े हैं। वे अपने गुणों के साथ खड़े होंगे, अपने संस्कारों के साथ खड़े होंगे। आज सम्पूर्ण देश में दूसरे किसी शिक्षा संस्थान के हमारे संस्थान के बराबर पूर्व छात्र नहीं हैं। पूर्व छात्रों की बहुत बड़ी शक्ति अपने हाथ में है। जिस शक्ति को कभी न कभी संस्कारों का स्पर्श हुआ है। उनके मन में भी भावनाएँ हैं। अनेक बार बड़े बड़े लोग मिलते हैं और बड़ी सहजता से कहते हैं कि बचपन में मैं भी सरस्वती शिशु मंदिर में पढ़ा हूँ। एक भाव मन के अन्दर है, एक सोच उनके अन्दर है। मैं एक बहुत बड़ी बात कहना चाहूँगा कि आने वाले दिनों में ये जो पूर्वछात्र हैं, इनका केवल संगठन नहीं करना है, संगठन के साथ साथ उस शक्ति का उपयोग इस देश के परिवर्तन में कैसे ला सकते हैं, इस का एक तंत्र आने वाले दिनों में क्या हम विकसित कर सकते हैं ? इस बारे में गंभीरता पूर्वक सोचना चाहिए।

हम वर्तमान छात्र शक्ति को गढ़ें

दूसरी शक्ति जो हमारे पास है, वे वर्तमान के छात्र हैं। ये भी लाखों की संख्या में हैं। ये अभी नाजुक हैं, उन की गढ़ाई की, उनके भावी जीवन की मूलभूत रचना होनी चाहिए, जो आज हम सब लोगों के हाथ में है। आज जो अपनी प्रक्रिया चल रही है, उस प्रक्रिया की ठीक से समीक्षा करते हुए, उसमें कौन सी बातें आज के प्रसंगों के अनुसार, समय के अनुसार युगानुकूल क्या–क्या जोड़ने की आवश्यकता है। आने वाले भविष्य का भारत निर्माण करने में जो आज की पीढ़ी है, जो बालक हैं, जो छात्र हैं, वे भविष्य के अच्छे व श्रेष्ठ नागरिक बनेंगे। देश के प्रति कर्तव्य भावना का निर्वहन करने वाले बनेंगे। क्या, आज के उनके जीवन में इन बातों का बीजा रोपण होता है? उस को हम और अधिक सशक्त कर सकते हैं ? बहुत बड़ी शक्ति है, मैं फिर कहना चाहूँगा कि किसी

भी देश में ऐसा तन्त्र नहीं है, जिसके पास वर्तमान की इतनी बड़ी छात्र शक्ति होगी ? जो हमारे हाथ में हैं।

आचार्यों व अभिभावकों का नियोजन करें

छात्र शक्ति के साथ स्वाभाविक रूप से आचार्य एवं अभिभावक वर्ग जुड़ा रहता है। अभिभावक वर्ग श्रद्धा के कारण, किसी एक भाव के कारण कहीं न कहीं हमारे सम्पर्क के दायरे में आता है। इस तरह छात्र भी हैं, उनके माता–पिता भी हैं। इन सबका मिलाकर विचार करेंगे तो एक बहुत बड़ी शक्ति होती है। इन सबका अगर ठीक से नियोजन करना है तो स्वाभाविक रूप से हमारा जो आचार्य वर्ग है, उस आचार्य वर्ग की भूमिका और अधिक प्रभावी कैसे हो सकती है? इसका विचार हमें करना पड़ेगा। आचार्यों की संख्या भी कम नहीं है। प्रारम्भ में कहीं किसी प्रकार की आवश्यकता के कारण वह अपने विद्या मंदिर में आया होगा। आने के बाद समझता गया, स्वीकार करता गया और अपने जीवन की लम्बी यात्रा इसी माध्यम से मैं पूरी करूँगा, ऐसा संकल्प लेकर चला हुआ आचार्य वर्ग अपने पास कम नहीं है। ठीक है, कुछ आते जाते रहेंगे परन्तु स्थायी संख्या भी कम नहीं हैं। आचार्यों की स्थायी शक्ति के बल पर, इस अभिभावक शक्ति के बल पर, वर्तमान छात्रों के बल पर और पूर्वछात्रों की संख्या के बल पर एक विराट शक्ति का संयोजन करते हुए आज की वर्तमान स्थिति में जो बदली हुई जीवन शैली है, उसके आनन्द का लोग अनुभव कर रहे हैं। इस आनन्द को स्थायी बनाने की दिशा में क्या हम कुछ प्रयोग, कुछ प्रयत्न कर सकते हैं ? इस के बारे में भी विचार करने की आवश्यकता है।

हमें शिक्षा को सही दिशा में बढ़ाना है

हम जानते हैं कि इस तालाबन्दी के कारण कई प्रकार की समस्याएँ खड़ी हुई हैं। रोजगार बन्द हुए, विद्यालय अभी शुरु नहीं हो पाये, कब शुरु होंगे ? इस बारे में अभी अनिश्चितता बनी हुई है। एक पीढ़ी का एक वर्ष का अन्तराल अपने आप में बहुत बड़ा संकट है। पूरी पीढ़ी यदि एक साल शिक्षा से वंचित रहेगी तो पूरे देश की गति में एक साल का अन्तर पड़ जायेगा। उसके कारण से क्या–क्या सामाजिक प्रश्न निर्माण होंगे, क्या मानसिक प्रश्न निर्माण होंगे, क्या निराशा निर्माण होगी, क्या हताशा आयेगी? लोग लोक–लुभावन नारे लगाने की कोशिश कर रहे हैं। परन्तु यदि यह निर्णय करने का विचार है कि अन्तिम वर्ष की परीक्षा भी नहीं लेंगे तो यह विचार गलत दिषा में उठाया गया कदम है। यह जो शिक्षा क्षेत्र में आज चल रहा है, मैं समझता हूँ कि समाज भी अन्तिम वर्ष की परीक्षा न ली जाय, बिना परीक्षा के आगे बढ़ा दिया जाय, यह तो समाज का जो जानकार वर्ग है, वह भी इसे स्वीकार नहीं कर रहा है। जिन जानकारों के दबाव में आकर जिन्होंने यह घोषणा की होगी, उन्हें भी अपनी घोषणा पर फिर से सोचने के लिए हम उन्हें मजबूर करेंगे, इतनी ताकत आज हमारी है। शिक्षा को गलत दिशा में नहीं ले जाना चाहिए।

कोई भी शिक्षा से वंचित न रहे

आज की आर्थिक परिस्थितियों के कारण रोजगार कम है, व्यापार कम हुआ है, कई लोगों की नौकरियों के प्रश्न हैं। ऐसे ही दो–चार महीनें और निकल जाते हैं तो व्यक्तिगत जीवन में,

पारिवारिक जीवन में कई प्रकार की समस्याएँ झेलने वाला वर्ग बहुत बड़ा होगा। अपना शिक्षा शुल्क भी बढ़ नहीं पायेगा, क्या होगा ? मैं समझता हूँ कि विद्या भारती के नाते इस सन्दर्भ में हम क्या कर सकते है ? मुझे कठिनाइयाँ मालूम है, हमलोग निःशुल्क तो नहीं दे पायेंगे लेकिन इसमें से कुछ न कुछ रास्ता निकालने पर हमें विचार अवश्य करना चाहिए। ध्यान रहे शुल्क के अभाव में कोई भी शिक्षा से वंचित न रह जाय। केवल इतना ही नहीं है, विद्यालय शुरु होंगे, नहीं होंगे भिन्न–भिन्न प्रकार के जो कोचिंग क्लास चलते हैं, उनके भी प्रश्न आने वाले हैं। यह वर्ष शिक्षा जगत में कई प्रकार के प्रश्न खड़े करने वाला बनेगा। इस सन्दर्भ में भी हम क्या–क्या कर सकते हैं, इसका भी विचार करने की आवश्यकता रहेगी। इस पर हम किसी समूह में विचार करेंगे।

बड़ी भूमिका निर्वहन की सिद्धता बनायें

मैं अन्त में यही कहूँगा कि शिक्षा की जो हमारी भूमिका रही है, वह संस्कार प्रधान हो, व्यक्ति के जीवन को दिशा देने वाली हो। शिक्षा से वह श्रेष्ठ नागरिक बनें, श्रेष्ठ देशभक्त बनें और श्रेष्ठ हिन्दू बनें। ऐसे शिक्षा संस्थान के नाते एक बड़ी भूमिका रहती है। वैसे तो भूमिका सब की रहती है, मंदिरों की है, साधु–सन्तों की है, जाति–बिरादरी की है, संस्थाओं की है, मैं सरकार शब्द का प्रयोग करना नहीं चाहता, यह भूमिका सरकार की नहीं है। यह तो समाज में व्याप्त अपनी जैसी जो शक्तियाँ हैं, उन शक्तियों को ही इसके बारे में विचार पूर्वक आने वाले वर्ष के लिए कोई चिन्तन करना चाहिए। इस संकट के काल खंड में भी किसी प्रकार का समाज जीवन पर कोई परिणाम न होते हुए, आगामी वर्ष में पूर्ववत् जीवन प्रारम्भ हो सकता है, इस दिशा में हमारी भूमिका क्या हो सकती है ? इस पर विचार हो, मंथन हो, इसके क्रियान्वयन की बातें होती जाय।

मुझे लगता है कि आज के इस संकट को हम संकट न मानें। इसमें आगे बढ़ने के कई अवसर भी आए हैं। हमारा आगे बढ़ना भी विश्व के छोटे–मोटे देशों के लिए एक मार्गदर्शक सिद्ध होगा। ऐसी बहुत बड़ी भूमिका निर्वहन करने की हमारी सिद्धता बने। इसी निवेदन के साथ आप सबको फिर एकबार अन्त में नमस्कार करते हुए आयोजकों को धन्यवाद देते हुए मेरी बात पूरी करता हूँ।

।। इति शुभम् ।।